मद्रित पष्ठों की संख्या : 4

BHDC-103

बी. ए. (ऑनर्स) हिन्दी (बी. ए. एच. डी. एच.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर. 2021

बी.एच.डी.सी.-103 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* ***पहला*** *प्रश्न अनिवार्य है।*

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं ***तीन*** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 12×3=36

(क) गोरी सोवे सेज पर मख पर डारे केस.

चल खसरो घर आपने रैन भई चहँ देश।

खसरो रैन सोहाग की. जागी पी के संग.

तन मेरो मन पीऊ को दोऊ भए एक रंग।

(ख) हम न मरैं मरिहैं संसारा।

हमको मिला जिआवनहारा॥

साकत मरहिं संत जन जीवहिं।

भरि-भरि राम रसाइन पीवहिं॥

हरि मरिहैं तो हमह मरिहैं।

हरि न मरै हम काहे को मरिहैं॥

कहै कबीर मन मनहिं मिलावा।

अमर भए सख सागर पावा॥

(ग) काहे कौं रोकत मारग सधौ।

सनह मधप निरगन कंटक तैं. राजपंथ क्यों रुंधौ॥

कै तम सिखि पठए हौ कबिजा. कह्यो स्याम घनहँ धौ।

बेद परान समति सब ढँढौ. जवतिनि जोग कहँ धौ॥

ताकौ कहा परेखौ कीजै. जानै छाँछ न दधौ।

सर मर अक्रर गयौ लै. ब्याज निवेरत ऊधौ॥

(घ) एकै सधै सब सधै. सब साधे सब जाय।

रहिमन मलहिं सींचिबो. फलै फलै अघाय॥

छिमा बडन को चाहिए. छोटेन को उत्पात।

का रहिमन हरि को घटयो. जो भग मारी लात॥

(ङ) तजि तीरथ. हरि-राधिका-तन-दति कर अनराग।

जिहिं ब्रज-केलि-निकंज-मग पग पग होत प्रयाग॥

या अनरागी चित्त की गति समझै नहिं कोइ।

ज्यौं ज्यौं बडे स्याम रंग. त्यौं त्यौं उज्जल होइ॥

2. कबीर के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए। 16

3. जायसी की भक्ति-भावना को रेखांकित कीजिए। 16

4. सरदास के वात्सल्य वर्णन का विवेचन कीजिए। 16

5. तलसीदास की कविता के सामाजिक-राजनीतिक पक्ष को स्पष्ट कीजिए। 16

6. रहीम की कविता के भावपक्ष और कलापक्ष की चर्चा कीजिए। 16

7. 'मीराबाई की भक्ति शास्त्रीयता का निषेध करती है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए। 16

8. एक कवि के रूप में बिहारी का मल्यांकन कीजिए। 16

9. कष्ण भक्त कवि के रूप में रसखान के कवि-कर्म पर विचार कीजिए। 16

10. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 8×2=16

(क) अमीर खसरो

(ख) विद्यापति के काव्य में भक्ति

(ग) घनानंद के काव्य में प्रेम

(घ) आदमीनामा